शीत ऋतु में बागों की देखभाल

हरे कृष्ण* और **अरविंद कुमार सिंह****

इस द्विमाही उत्तर भारत में हाड़ कंपा देने वाली ठंड, कोहरे-पालों से भरे दिन एवं पर्वतीय क्षेत्रों में बर्फबारी शीत ऋतु की पूर्ण अभिव्यक्ति के संकेत हैं। इस ऋतु में उत्तर-पूर्व पवन पूरे देश में भूमि से समुद्र की तरफ बहती है जिसके कारण सामान्यतया मौसम में शुष्कता बनी रहती है। भारत के उत्तर-पश्चिमी भाग में पश्चिमी विक्षोभ के कारण इस दौरान वर्षा भी होती है। इस वर्ष, जहां एक तरफ मौसमी घटना 'ला नीना' के जनवरी-फरवरी, 2023 तक बने रहने की आशंका है, वहीं दूसरी ओर भारतीय मौसम विज्ञान विभाग द्वारा सर्दी के महीनों के अपेक्षाकृत गर्म रहने का पूर्वानुमान बताए गए हैं। जलवायु परिवर्तन के इस दौर में सफल बागवानी करने के लिए किसान बहनों-भाइयों को पूर्व से कहीं अधिक सजग रहने की आवश्यकता है।

इस द्विमाही बगीचों में होने वाली उद्यानिकी क्रिया-कलापों को तत्परता से करना आवश्यक है क्योंकि इस समय बागों में की गई अंत:सस्यन गतिविधियों का पौधों की उत्तरजीविता एवं फलन पर निर्णायक प्रभाव पड़ता है। इस अवधि में बहुतेरे फल वृक्षों में पुष्पण की प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाती है, अत: उत्पादन की दृष्टि से यह द्विमाही बहुत महत्वपूर्ण है। इसके अतिरिक्त इस दौरान, नवस्थापित बागों की देखभाल, निराई-गुड़ाई, सिंचाई, उर्वरण, कीट एवं व्याधियों की रोकथाम जैसे इत्यादि महत्वपूर्ण कार्य करने होते हैं। उच्च गुणवत्ता के फलों के उत्पादन के लिए बगिया की समुचित देखभाल अति आवश्यक है। आज बागों में की गई मेहनत कल सफलता की ऐसी मिठास घोलेगी कि बागबान का मन बाग-बाग हो जाएगा।

आम

आम में आएँ बौर, करें इन पर गौर

इस मौसम में पौधों विशेषकर नव-स्थापित बागान, को पाले से बचाना अति आवश्यक है। जनवरी में नर्सरी में लगे पौधों को पाले से सुरक्षा के लिए छप्पर से ढकना चाहिए। वहीं दूसरी ओर छोटे पौधों को भी पुआल से ढक दें। पाले से बचाव के लिए बाग में समय-समय पर हल्की सिंचाई, निराई-गुड़ाई एवं सफाई का कार्य करें। आम के नवरोपित बागों की सिंचाई करें।

इस समय लगने वाले बौरों का भी ध्यान रखना आवश्यक है, क्योंकि इन्हीं पर फलोत्पादन निर्भर करेगा। जनवरी के प्रथम सप्ताह में आने वाले बौर में फल नहीं लगते और ये अक्सर गुच्छे का रूप धारण कर लेते हैं। अत: ऐसे बौर को निकालकर नष्ट कर दें। यह आम में उर्वरक देने का सही समय है। नाइट्रोजन 500 ग्राम, फॉस्फोरस 500 ग्राम तथा पोटाश 700 ग्राम प्रति पौधा प्रयोग करें। इन्हें मृदा में मिलाकर हल्की सिंचाई कर दें। बागों की निराई-गुड़ाई एवं सफाई का कार्य भी करें।

फरवरी में थालों की गुड़ाई करें। फुदका या तेला (मैंगो हॉपर) के नियंत्रण के लिए इमिडाक्लोप्रिड (0.3 प्रतिशत) तथा चूर्णिल आसिता रोग से बचाव के लिए केराथेन (20 ग्राम प्रति 100 लीटर पानी में) अथवा घुलनशील गंधक दो ग्राम प्रति लीटर पानी या हेक्साकोनाजोल के 0.1 प्रतिशत प्रति लीटर के घोल का का छिड़काव फरवरी के अंतिम सप्ताह में अवश्य करें। फरवरी में छोटे पौधों के ऊपर से छप्पर हटा दें। मीली बग (गुजिया) से बचाव के लिए वृक्षों के तने पर पॉलीथीन की 3 फुट चौड़ी पट्टी बांध दें एवं 250 ग्राम प्रति वृक्ष की दर से क्लोरपायरीफॉस धूल (1.5 प्रतिशत) को पेड़ के चारों ओर की मृदा में मिश्रित करना चाहिए। इसके अतिरिक्त, भूमि की सतह पर परभक्षी *ब्यूवेरिया बेसियाना* (2 ग्राम प्रति लीटर, $1x10^7$ बीजाणु प्रति मिलीलीटर) अथवा 5 प्रतिशत नीम बीज के गिरी सत्व का अनुप्रयोग प्रौढ़ कीटों को मारने के लिए करें। ध्यान रखने योग्य बात है कि इन्हीं दिनों पौधों पर फूल आते हैं और यदि किसी भी कीटनाशी का प्रयोग फूलों पर किया गया तो संपूर्ण परागण न होने से कम फल लगेंगे।

सही रोपाई, केला से कमाई

जनवरी के प्रथम एवं तृतीय सप्ताह में सिंचाई करें ताकि पाले से बचाव हो सके। इससे बचाव के लिए किसी पलवार (मल्च) का प्रयोग करें तथा बागों में सायंकाल में धुआं भी करें। पौधों को यदि सहारा न दिया हो तो बांस के डंडे से सहारा प्रदान करें। फरवरी के प्रथम तथा तृतीय सप्ताह में सिंचाई करें। केवल एक तलवारी पत्ती (भूस्तारी) को छोड़कर पौधे के आधार से निकलने वाली

*भाकृअनुप-भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान, वाराणसी **केंद्रीय बागवानी परीक्षण केंद्र, (भाकृअनुप-केंद्रीय शुष्क बागवानी संस्थान), वेजलपुर (गोधरा), गुजरात

बाद कटे भाग पर 1 प्रतिशत बोर्डो मिश्रण से उपचारित करना न भूलें, जिससे कि किसी संभावित व्याधि के प्रकोप से बचा जा सके। कल्लों के एकरूप फुटाव हेतु कलमी पौधों पर 1.5 प्रतिशत व कर्तन से तैयार पौधों पर 1 प्रतिशत हाइड्रोजन साइनामाइड का उपयोग करें। मिली बग, थ्रिप्स और चींटियों से बचाव हेतु मेटारिजियम अनिसोप्लिया + ब्यूवेरिया बेसियाना (2.108 बीजाणु प्रति मि.ली) के 2-2 लीटर प्रति हैक्टर की दर से मृदा उपचार करें। भृंग का प्रकोप होने पर 0.4 मिली प्रति लीटर इमिडाक्लोप्रिड का छिड़काव करें। अंगूर में प्रथम वर्ष गोबर/कम्पोस्ट खाद के अलावा 100 ग्राम नाइट्रोजन, 60 ग्राम फॉस्फेट व 80 ग्राम पोटाश की मात्रा प्रति पौधा आवश्यक होती है। 5 वर्ष या इससे ऊपर यह मात्रा बढ़कर 500 ग्राम नाइट्रोजन, 300 ग्राम फॉस्फेट व 400 ग्राम पोटाश हो जाती है। फॉस्फोरस की सम्पूर्ण तथा नाइट्रोजन व पोटाश की आधी मात्रा काट-छांट के बाद जनवरी माह में दें। उर्वरक डालने के बाद हल्की सिंचाई करें। कटी हुई शाखाओं से 30-40 सें.मी. आकार की कलमें तैयार कर लें तथा इन्हें 10-15 दिनों तक नम भूमि में दबाने के बाद पौधशाला में लगा दें। बेहतर परिणाम हेतु, कलमों को 500-1000 पीपीएम इंडोल ब्यूटाइरिक अम्ल से उपचारित भी किया जा सकता है। उत्तरी भारत में अंगूर के नए बाग लगाने का भी यही उपयुक्त समय है। फरवरी में चूर्णिल आसिता रोग से बचाव के लिए केराथेन (0.1 प्रतिशत) का छिड़काव करें। पौधों के तीन पत्तियों वाली अवस्था पर 2 ग्राम प्रति लीटर ट्राइकोडर्मा का छिड़काव मृदुल और चूर्णिल आसिता दोनों ही व्याधियों से बचाव में उपयोगी सिद्ध हुआ है। बागों की निराई-गुड़ाई एवं सफाई का कार्य करें।

बागवान जिम्मेदार तो पपीता दे पैदावार

पपीते को पाला अत्यधिक हानि पहुंचाता है। अत: जनवरी में पाले से बचाने

पपीते के नवरोपित पौधों की देख-भाल

के लिए पर्याप्त प्रबंध करें। पौधों को पुआल से अथवा अवयनित (नॉनवोवेन) कपड़ों से ढक दें तथा समय पर सिंचाई करते रहें। पुआल को फरवरी के अंत में हटा दें। 25 ग्राम नाइट्रोजन, 50 ग्राम फॉस्फोरस तथा 100 ग्राम पोटाश का प्रयोग फरवरी में प्रति पौधा की दर से करें। बागों की निराई-गुड़ाई एवं सफाई का कार्य करें। पपीता के नवरोपित बागों की सिंचाई करें। बागों की निराई-गुड़ाई एवं सफाई का कार्य करें।

अनार में प्रबंधन

जंगली अनार के पौधों पर वेज ग्राफ्टिंग द्वारा जनवरी-फरवरी माह में 90 प्रतिशत सफलता के साथ पौधे तैयार किए जा सकते हैं। जनवरी माह के दौरान यदि पौधों को सुषुप्त अवस्था में रखा गया है तो इस अवधि में 15 दिनों के अंतराल पर बोर्डो मिश्रण और कॉपर ऑक्सी क्लोराइड व ब्रोन्पोल का छिड़काव करें। सिंचाई की उपलब्धता के आधार पर नए बागों की स्थापना का कार्य फरवरी माह में किया जा सकता है। पौधों में रोपण से पूर्व 2.5 ग्राम प्रति लीटर की दर से कॉपर ऑक्सीक्लोराइड का छिड़काव करें। अनार के किशोर पौधों (1-3 वर्ष आयु) में संस्तुत उर्वरकों की मात्रा को नयी वृद्धि के साथ-साथ तीन बराबर भागों में जनवरी, जून और सितंबर माह में देना चाहिए। यदि मृग बहार की फसल ली गयी हो तो तैयार फलों को जनवरी माह में तुड़ाई के पश्चात बाजार ले जाने की व्यवस्था करें।

बेर की करें तुड़ाई

बेर में चूर्णिल आसिता रोग अत्यधिक हानि पहुंचाता है। इससे बचने के लिए फरवरी में 0.2 प्रतिशत केराथेन का छिड़काव करें।

स्थानीय बाजार में बेर का विपणन

15 दिनों के अंतराल पर दोबारा यही छिड़काव करें। फरवरी के अंत में किसान बेर के पौधे भी लगा सकते हैं। फरवरी में बेर की अगेती किस्में पकने लगती हैं। फलों को अच्छी दशा में बनाए रखने के लिए, तुड़ाई सुबह ही करनी चाहिए। तुड़ाई के समय फलों को उनके रंग एवं आकार के आधार पर छांट कर श्रेणीकृत किया जाना चाहिए। छंटाई उपरांत फलों को कपड़े की चादरों, जूते के बोरॉन, नाइलोन की जालीदार थैलियों, बांस की टोकरियों, लकड़ी अथवा गत्तों के डिब्बों में रखकर बाजार भेजा जा सकता है। बागों की निराई-गुड़ाई एवं सफाई का कार्य करें।

शीतोष्ण फलों

शीतोष्णवर्गीय फलों के बाग लगाने का सही समय जनवरी है। यदि किसी कारणवश दिसम्बर में छंटनी न कर पाएं हों तो जनवरी में इन फल वृक्षों की छंटाई अवश्य करें। छंटाई, सधाई प्रणाली को ध्यान में रखकर करनी चाहिए। कटे भाग पर चौबटिया लेप (सिंदूर: कॉपर कॉर्बोनेट: अलसी तेल:: 1:1:1.25) लगा देना चाहिए। दो प्रतिशत डोर्मेंट तेल का प्रयोग सैनजोस स्केल और चिचड़ी की रोकथाम के लिए किया जा सकता है। बागों की निराई-गुड़ाई एवं सफाई का कार्य करें।

फलदार व छोटे पौधों में गोबर की खाद तथा फॉस्फोरसयुक्त उर्वरकों का प्रयोग करना चाहिए। कीटों एवं रोगों की रोकथाम के लिए यदि दिसम्बर में कोई छिड़काव न कर पाए हों तो जनवरी के प्रथम सप्ताह में यह कार्य संपूर्ण करें। बागों में जनवरी में उर्वरक देना भी न भूलें।

बौर से लदे लीची के बागान

जनवरी में पाले से सुरक्षा के प्रबंध अवश्य करें। फरवरी में लीची में फूल आते समय सिंचाई न करें क्योंकि इससे फूलों के गिरने का डर रहता है। फूल आने से पहले एवं बाद में पानी की समुचित व्यवस्था करें। चूर्णिल आसिता रोग के प्रकोप से बचने के लिए लीची में संस्तुत रसायनों का प्रयोग करें। फुदका कीट से बचाव हेतु इमिडाक्लोरप्रिड (0.7-1.0 मिली प्रति लीटर) अथवा थायोमेथोक्सॉम (2-3 ग्राम प्रति 5 लीटर पानी) का छिड़काव करें। कैल्शियम अमोनियम नाइट्रेट की आधी मात्रा अर्थात् 1.5 कि.ग्रा. का प्रति पौधा फरवरी में प्रयोग करें। लीची के नवरोपित बागों की सिंचाई करें। बागों की निराई-गुड़ाई एवं सफाई का कार्य करें।

आंवले के लिए यह द्विमाही विशेष

उत्तरी भारत में, आंवला के फलों की तुड़ाई जनवरी-फरवरी माह तक जारी रह सकती है। अत: इन क्षेत्रों में इस दौरान फलों से लदे वृक्षों को बांस-बल्ली की सहायता से सहारा देने कि व्यवस्था की जानी चाहिए, ताकि शाखाओं को टूटने से रोका जा सके। बिक्री की उचित व्यवस्था करें। चूंकि, इस दौरान फलों का भी विकास होता है, अत:

सिंचाई की भी समुचित व्यवस्था होनी चाहिए। परंतु ध्यान रहे कि तुड़ाई से 15 दिनों पूर्व सिंचाई रोक दी जाए, जिससे फल समय से तैयार हो सके। जिन क्षेत्रों में सिंचाई की समुचित व्यवस्था हो, वहां बसंत के आगमन के साथ ही पौध रोपण का कार्य फरवरी माह के दूसरे पखवाड़े से प्रारम्भ किया जा सकता है यह मार्च तक जारी रखा जा सकता है। जिन क्षेत्रों में शीत ऋतु में पाले की आशंका हो, वहाँ गंधक के अम्ल (0.1 प्रतिशत) का छिड़काव पूरे वृक्ष पर किया जाना चाहिए। जरूरत पड़े तो छिड़काव को दोहराएं। फरवरी में फूल आने का समय होता है, जो नई पत्तियों के साथ आते हैं। इस समय सिंचाई न करें। आंवला के बाग में गुड़ाई करें एवं थाले बनाएं।

आंवला

आंवला के एक वर्ष के पौधे के लिए 10 किलोग्राम गोबर/कम्पोस्ट खाद, 100 ग्राम नाइट्रोजन, 50 ग्राम फॉस्फेट व 75 ग्राम पोटाश देना आवश्यक होगा। 10 वर्ष या अधिक आयु के पौधे में मात्रा बढ़कर 100 किग्रा गोबर/कम्पोस्ट खाद, 1 किग्रा नाइट्रोजन, 500 ग्राम फॉस्फेट व 750 ग्राम पोटाश हो जाएगी। उक्त मात्रा से पूरा फॉस्फोरस, आधी नाइट्रोजन व आधी पोटाश की मात्रा का प्रयोग जनवरी माह से करें। बागों की निराई-गुड़ाई एवं सफाई का कार्य करें।

खजूर देगा भरपूर कमाई

जनवरी-फरवरी माह में खजूर के बागों में कई महत्वपूर्ण कार्य किए जाते हैं जिनमें कटाई-छँटाई, उर्वरकों का प्रयोग तथा परागण प्रमुख हैं। खजूर के पौधे एक बीजपत्रीय तथा एकल तना होने से शाखित नहीं होते हैं। अतरू, व्याधिग्रस्त, सूखी, पुरानी, क्षतिग्रस्त पत्तियों को सर्दियों में हटा देना चाहिए। फल गुच्छों से सटी हुई पत्तियों के डंठलों से कांटे निकालना आवश्यक है, ताकि उनके आस-पास परागण, फल गुच्छों की छँटाई, डंठल मोड़ना, रसायनों का छिड़काव, थैलियाँ लगाना एवं फलों की तुड़ाई आदि के कार्य

खजूर

सरलता से हो सकें। पत्ती को डंठल सहित जितना संभव हो सके, मुख्य तने के समीप से हटाया जाना चाहिए, जिससे कि मुख्य तने के सतह को चिकना रखा जा सके। फल गुच्छा अनुपात 1:6 रखने पर अधिक फल उत्पादन एवं उत्तम गुणवत्ता वाले फल प्राप्त होते हैं। अत:, अच्छी फसल हेतु पूर्ण विकसित वृक्ष पर लगभग 70-100 पत्तियाँ होनी चाहिए। फॉस्फोरस (0.5 किग्रा), पोटाश (0.5 किग्रा) की पूर्ण मात्रा और नाइट्रोजन की 50 प्रतिशत मात्रा (0.75 किग्रा) को फूल आने से तीन सप्ताह पहले दिया जाना चाहिए, यह विभिन्न किस्मों में जनवरी-फरवरी माह के दौरान होता है इसके बाद सिंचाई की जानी चाहिए।

खजूर में नर एवं मादा पुष्पक्रम अलग-अलग पौधों पर आते हैं अत:, अच्छे उत्पादन के लिए कृत्रिम परागण किया जाता है। ताजे एवं पूर्ण रूप से खुले हुये नर पुष्पक्रमों को अखबार या पॉलिथीन की चादर पर झाड़कर एकत्रित कर लेते हैं। मादा पुष्पक्रमों को, जो तुरंत खिले हों, परागकणों में डुबोए गए रूई के फाहों से दो-तीन दिन तक लगातार प्रात:काल परागित करें या नर पुष्पक्रमों की लड़ियों को काटकर खुले मादा पुष्पक्रम के मध्य में उल्टा करके हल्के से बांध दिया जाता है जिससे उनमें से परागकण शनै:-शनै: गिरते रहें। जनवरी-फरवरी माह में लेसर डेट मॉथ कीट के लार्वा पराग कणों को खाकर नुकसान पहुँचा सकते हैं।

कटहल के उद्यान, मांगे ध्यान

यदि दिसम्बर में खाद एवं उर्वरक न दे पाए हों तो जनवरी में यह कार्य पूर्ण करें। छोटे पौधों की पाले से बचाव के उपाय करें। फरवरी के अंत में मिली बग के प्रकोप से बचने के लिए पेड़ों पर आम की भांति पॉलीथीन की पट्टी लगाएं।

फालसा करे नव पल्लव से शृंगार

उत्तरी भारत में फालसे में जनवरी में गहन काट-छांट करनी चाहिए। उसके बाद कटे भागों पर बोर्डो लेप लगाएं। पौधों को उपयुक्त मात्रा में गोबर की खाद और उर्वरक दें।

कलिकायन, उर्वरण एवं कीट प्रबंधन से लोकाट में भरपूर फलन

जिन क्षेत्रों में सिंचाई की समुचित व्यवस्था हो, उन क्षेत्रों में बसंत के आगमन के साथ ही पौध रोपण का कार्य फरवरी माह के दूसरे पखवाड़े से प्रारम्भ किया जा सकता है यह मार्च तक जारी रखा जा सकता है। एक मीटर गहरे और एक मीटर व्यास के गड्ढे की खुदाई का कार्य वास्तविक वृक्षारोपण से कम से कम एक महीने पहले किया जाना चाहिए। जिन क्षेत्रों में दीमक का प्रकोप हो, वहाँ क्लोरपाइरीफोस 10 मिलीलीटर प्रति गड्ढे की दर से प्रयोग किया जाना चाहिए। प्रति पौध 25-30 किग्रा अच्छी तरह से सड़ी हुई गोबर खाद दी जानी चाहिए। इस माह के दौरान, शील्ड अथवा 'टी' कलिकायन विधि द्वारा तीन माह पुरानी शाखा से कलिका लेने पर पौध-प्रवर्धन में भी अपेक्षित सफलता मिलती है। उत्तर भारत के कुछ स्थानों पर जनवरी माह तक लोकाट में फूल आते हैं। फलों के सेट होने के बाद, 15 दिनों के अंतराल पर सिंचाई की जानी चाहिए जिससे फलों का विकास हो सके। फरवरी माह में नाइट्रोजन उर्वरक की आधा खुराक दी जा सकती है ताकि फलों की अभिवृद्धि हो सके। फल मक्खी का प्रकोप यदि अधिक हो तो कीटनाशी इमिडक्लोरपि (0.5 मिली/प्रति लीटर) का छिड़काव फरवरी माह में 15 दिनों के अंतराल पर दो बार किया जा सकता है।

स्वाद का नहीं कोई तोड़, स्ट्रॉबेरी है सबसे बेजोड़

जनवरी में स्ट्रॉबेरी के खेत में निराई-गुड़ाई करें। पलवार न बिछाई गई तो वांछित पलवार जैसे पुआल या पॉलीथीन का प्रयोग करें। फलों में उच्च गुणवत्ता प्राप्त करने के लिए फरवरी के शुरू में जिब्रेलिक अम्ल (75 पी.पी.एम.) का छिड़काव करें तथा समय पर सिंचाई करते रहें। पत्तियों पर यदि धब्बे दिखाई पड़ें तो डाईथेन-एम-45 (2 ग्राम प्रति लीटर पानी) या बॉविस्टीन (1 ग्राम प्रति लीटर पानी) का छिड़काव करें। पहाड़ी क्षेत्रों में किसान स्ट्रॉबेरी को केवल नए पौधे तैयार करने के लिए लगाते हैं। अत: यदि फरवरी के अंत में पौधों पर फूल आ रहे हैं तो उन्हें तुरंत हटा दें। परंतु समतल भागों में किसान ऐसा न करें। मैदानी भागों में फरवरी में स्ट्रॉबेरी की फसल तैयार हो जाती है। इसे तोड़कर, 250 ग्राम के पन्नेट में पैक कर बाजार भेजने की व्यवस्था करें।